आमंत्रण

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विकसित भारत @2047 और भारतीय ज्ञान प्रणाली

(Developed India @2047 and Indian Knowledge System)

(Hybrid Mode)

04 February, 2026

आयोजक

शिक्षक शिक्षा विभाग

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई

(उत्तर प्रदेश)

" विकसित भारत की यात्रा में, भारतीय ज्ञान परंपरा मात्र अतीत का गौरव नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण के लिए एक मार्गदर्शक शक्ति है, जो आधुनिक चुनौतियों के लिए स्वदेशी समाधान प्रदान करती है "

मुख्य संरक्षक

प्रो0 अमित भारद्वाज

(निदेशक उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश, प्रयागराज)

संरक्षक

प्रो0 निखिलेश शरण

(प्राचार्य, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई)

संयोजक
डॉ0 सुधीर कुमार
मो0नं0– 7007451857, 9456219106
ईमेल–sudhirlu@gmail.com

आयोजन सचिव
डॉ0 सुनील कुमार पाण्डेय
मो0 नं0– 9839414550
ईमेल– skpandey.gcic@gmail.com

सह–संयोजक
डॉ0 प्रवेश कुमार
डॉ0 अभिषेक सेंगर
डॉ0 सुरेन्द्र प्रताप
डॉ0 कमलेश यादव
डॉ0 शैलजा शर्मा
डॉ0 सुधाँशु कुमार पाण्डेय
डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा

सह–आयोजन सचिव
श्री बलराम सिंह
डॉ0 तारकेश्वर गुप्ता
डॉ0 अजित आनन्दमणि
डॉ0 नितिन बाजपेयी
डॉ0 सुधीर कुमार सिंह
डॉ0 नमिता त्रिपाठी
श्री राज किशोर पाण्डेय

आयोजन समिति–
डॉ0 जय भगवान सिंह
श्रीमती मन्जू यादव
डॉ0 बृज मोहन यादव
डॉ0 सत्येन्द्र सिंह
डॉ0दिलप्रीत कौर
डॉ0 सुधीर कुमार शर्मा
डॉ0 गुरविन्दर कौर
डॉ0 शिवम मौर्या
डॉ0 अमलेश यादव
डॉ0 सुमन यादव
सुश्री अर्पिता मौर्या
श्री कृष्ण कुमार कनौजिया
डॉ0 गुलशन कुमार

परामर्शदात्री समिति–
प्रो0 दिनेश कुमार, विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
प्रो0 सारनाथ सिंह (अवकाश प्राप्त) शिक्षा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।
प्रो0 प्रवीन कुमार, शिक्षा विभाग जे0एन0 पी0जी0 कॉलेज लखनऊ।
प्रो0 अरूण कुमार, संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय नई दिल्ली।
प्रो0 सन्तोष अरोड़ा, विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।
प्रो0 अजित कुमार, सी0आई0ई0 दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली।

महाविद्यालय के बारे में –

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1979 में उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग द्वारा की गई थी। यह महाविद्यालय हरदोई नगर में सीतापुर रोड पर अवस्थित है और क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। संस्थान के विज्ञान, वाणिज्य तथा शिक्षक शिक्षा (बी.एड) के पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किए जा रहे हैं। महाविद्यालय ने अपने स्थापना काल से ही शैक्षणिक उत्कृष्टता, नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और भारतीय ज्ञान परंपरा के समन्वय के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का संकल्प अपनाया है।

हरदोई के बारे में–

हरदोई उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रमुख जनपद एवं ऐतिहासिक नगर है. जो लखनऊ मण्डल के अन्तर्गत आता है। यह शहर अपनी सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा कृषि समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है। हरदोई का ऐतिहासिक उल्लेख पुराणों में मिलता है तथा इस नगरी का सम्बन्ध भक्त प्रहलाद से भी जोड़ा जाता है। समय के साथ यह नगर शिक्षा, व्यापार और प्रशासन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। हरदोई में आज अनेक उच्च शिक्षण संस्थान, महाविद्यालय और तकनीकी केंद्र संचालित हैं, जो क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संगोष्ठी का परिचय –

भारत आज एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है। स्वतंत्रता के सौ वर्ष पूर्ण होने की दिशा में बढ़ते हुए, वर्ष 2047 तक "विकसित भारत" का स्वप्न मात्र एक राजनीतिक या आर्थिक लक्ष्य नहीं,बल्कि एक सभ्यतागत पुनर्जागरण का आहवान है। यह वही भारत है जिसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्','सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसे सिद्धांतों से मानवता को दिशा प्रदान किया है। परंतु आधुनिकता के तीव्र प्रवाह में भारतीय चिंतन के मूल तत्त्व एकात्मवाद, सत्य, धर्म, करुणा और सामंजस्य कहीं पीछे छूटने लगे हैं। अस्तु इस सेमिनार की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि यह हमें हमारे मूल जड़ों तक लौटने, उन्हें आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करने और भविष्य की रूपरेखा तैयार करने का अवसर प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल अतीत की गौरवगाथा ही नहीं है, अपितु यह एक जीवंत बौद्धिक परंपरा है, जो जीवन के हर क्षेत्र यथा शिक्षा,नीति, समाज, स्वास्थ्य अर्थव्यवस्था प्रौद्योगिकी आदि में मार्गदर्शन कर सकती है। जब विश्व आज स्थायित्व, शांति, संतुलन और सामंजस्य की तलाश में है, तब भारत के पास उन प्रश्नों के उत्तर अपने प्राचीन शास्त्रों, उपनिषदों, दर्शन और लोकज्ञान में पहले से ही विद्यमान हैं। ऐसे समय में "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना तभी सार्थक होगी जब उसका आधार भारतीय ज्ञान,मूल्य और परम्परा पर टिका हो। यह सेमिनार इस विमर्श को सशक्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है।

वर्तमान शताब्दी में प्रगति का मापदंड मात्र भौतिक संसाधनों या GDP तक सीमित नहीं रह सकता। सच्चा व वास्तविक विकास वह है जिसमें मानवता, नैतिकत्ता और अध्यात्म का समावेश हो। भारत की ज्ञान परंपरा का सदा से यही आह्वान रहा है कि "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते"अर्थात् ज्ञान से श्रेष्ठ कोई भी पवित्र नहीं है। यही विचार विकसित भारत @2047 के लक्ष्य का आध्यात्मिक और नैतिक औचित्य प्रस्तुत करता है। शिक्षा, नीति-निर्माण, विज्ञान, पर्यावरण और शासन, इन सभी क्षेत्रों में यदि भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का समावेश किया जाए, तो विकास न केवल सतत होगा, बल्कि मानवीय भी होगा। यह सेमिनार इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक चिंतन मंच प्रदान करता है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संगम एक नई दिशा में रूपान्तरित हो सकता है।

एतदर्श "विकसित भारत @ 2047 और भारतीय ज्ञान प्रणाली" का यह संगम हमें यह स्मरण कराता है कि विकास मात्र साधनों की प्रचुरता नहीं, बल्कि आत्मा की समृद्धि है। जब नीति में नैतिकता, प्रौद्योगिकी में मानवीयता और शिक्षा में संस्कार का समावेश होगा, तभी भारत वास्तव में विकसित और विश्व का मार्गदर्शक बन सकेगा। यही इस सेमिनार का सच्चा उद्देश्य, औचित्य और उपयोगिता है।

उपविषय–

(I) भारतीय ज्ञान परंपरा और आत्मनिर्भर भारत (Indian Knowledge System and Self-Reliant India)

(1) कर्मयोग व पुरुषार्थ सिद्धान्त आत्मनिर्भर समाज की नींव। (Prinicipales of Karmyoga and Purushartha: Foundations of Self-Reliant Society)

(2) ग्राम स्वराज और आर्थिक आत्मनिर्भरता। (Gram Swaraj and Modern Economic Self-sufficiency)

(3) भारतीय शिक्षा दर्शन और समग्र विकास। (Indian Educational Philosophy and Overall Development)

(4) प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं आधुनिक नवाचार। (Ancient Indian Science and Modern Innovation)

(5) आत्मनिर्भर भारत में महिला सशक्तिकरण की भूमिका। (Role of Women Empowerment in Self-Reliant India)

(II) सतत (दीर्घकालिक) विकास और भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण (Sustainable Development and Indian Philosophical Perspectives) -

(1) 'वसुधैव कुटुम्बकम्' : वैश्विक सहयोग व सद्भाव का आधार।(Vasudhaiva Kutumbakam : Foundation of Global Amiability and Cooperation)

(2) पर्यावरणीय संतुलन पर भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण। (Indian Philosophical Approaches on Ecological Balance)

(3) योग और आयुर्वेद : स्वास्थ्य व पर्यावरण का संतुलन। (Yoga and Ayurveda : Environmental Foundation of Health and Balance)

(4) उपनिषदों में मानव और प्रकृति का संबंध। (Human and Nature Relationship in the Upanishads)

(5) सतत (दीर्घकालिक) विकास लक्ष्यों के भारतीय मॉडल की परिकल्पना। (Envisioning Indian Model of Sustainable Development Goals (SDGs).

(III) शिक्षा, संस्कृति और विकसित भारत (Education, Culture and Developed India) -

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश (NEP 2020 and Integration of Indian Knowledge Systems)

(2) मूल्य आधारित शिक्षा और समग्र विकास। (Value - based Education and Holistic Development)

(3) भारतीय भाषाएँ, ज्ञान, विज्ञान और नवाचार का माध्यम। (Indian Languages as Medium of Knowledge, Science and Innovation)

(4) विकास का मूलाधार संस्कृति, कला और सृजनात्मकता। (Cultural and Creative Pathways Foundation of National Development)

(5) विकसित भारत के निर्माण में शिक्षक और शिक्षार्थी की भूमिका। (Role of Teachers and Learners in Building Developed India)

(IV) भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं नीति, नैतिकता व सुशासन (Indian Knowledge System and Policy, Ethics as well Good Governance) -

(1) अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र और शासन सिद्धांत। (Arthashastra, Dharmashastra and Theories of Good Governance)

(2) सुशासन की यात्रा : रामराज्य से विकसित भारत तक। (The Journey of Good Governance : From Ramrajya to Developed India)

(3) कर्तव्य–आधारित नागरिकता का विकास। (Duty - based Citizenship and Civic Responsibility)

(4) भारतीय प्रशासनिक नैतिकता और समकालीन प्रबंधन। (Indian Administrative Ethics and Contemporary Management)

(5) विकास में नीति, पारदर्शिता और नागरिक सहभागिता का महत्व। (Importance of Policy, Transparency and Citizen Participation in Development)

(V) भारतीय चिंतन धारा एवं विज्ञान, प्रौद्योगिकी व नवोन्मेष (Science, Technology and Innovation in Indian Thought System) -

(1) वेदों और शास्त्रों में निहित वैज्ञानिक संचेतना। (Scientific Consciousness in Vedas and Shastras)

(2) भारतीय गणित, खगोल और चिकित्सा विज्ञान की विरासत। (Legacy of Indian Mathematics, Astronomy, and Medicine)

(3) बुद्धिमत्ता और भारतीय नैतिक दृष्टिकोण। (Intelligence and Indian Ethical Apprtoaches)

(4) डिजिटल इंडिया और ज्ञान आधारित समाज की अवधारणा। (Digital India and Concept of Knowledge based Society)

(5) तकनीकी विकास में भारतीय मानवीय दृष्टिकोण। (Human-centric Approach to Technological Advancement)

NOTE

1. Typing must be in M.S. Word 2007, Times New Roman font 12 and Kruti Dev10 font Size 14.
2. Abstract, if any, maximum word limit is 400 words and Key words maximum five.
3. Word limit for research paper/article should not be more than 3000.
4. High-quality research papers/articles will be published in an ISBN book, All research papers must be as follows.
5. Last date of abtract & research paper acceptance 25 January 2026.

Please send your research papers/articles to the following email address:

iks.ssk@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विकसित भारत @2047 और भारतीय ज्ञान प्रणाली

(Developed India @2047 and Indian Knowledge System)

(Hybrid Mode)

04 February, 2026

REGISTRATION FORM

Name.....

Designation.....

Institution.....

....

Mobile No..... E-Mail.....

Accommodation Required - Yes ( ) No ( )

Title of the Paper.....

.....

Mode of Paper Presentation Online ( ) Offline ( )

Name of Co- Authors (if any).....

Details of Registration Fee-

For Faculty Member - 500 Rs.
For Research Scholar - 300 Rs.
For Students - 200 Rs.
On Spot Registration - 100 Rs. extra
Amount Rs.....Transaction Utr. No.....
No T.A., D.A. Will Be Given For Delegates and Participants.

Google Link for Registration:-
https://forms.gle/7CCp7hwxYsjTV4Mj8

ACCOUNT DETAIL- Maharana Pratap Govt. P.G.
ACCOUNT NO - 44771644598
IFSC CODE – SBIN0000649
BRANCH NAME - Hardoi

SBI
MAHARANA PRATAP GOVERNMENT P G
SCAN & PAY

Follow this link to join WhatsApp group.
https://chat.whatsapp.com/LuDvuzjqwx7552CTAPP8x0